f'k{kd f'k{kk vkj Hkkoh f'k{kd

Mk0 'kyh 'kek
शिक्षा शास्त्र विभाग, टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़, उ0प्र0, भारत

आज शिक्षा जीवन की अनिवार्य शर्त बन गई है। इसके बिना विकसित मानव की कल्पना नहीं की जा सकती है। जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं भोजन, वस्त्र के बाद मानव को मानव कहलाने के बिना सभ्य और शिक्षित समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षा की यह राह गुरू के दर से होकर जाती है। गुरू अपने ज्ञान और अनुभव से मामूली इंसान को सामान्य से विशिष्ट बनाते हैं। किसी भी देश के भविष्य निर्माण के लिए नई पीढ़ी को तैयार करने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु होता है जो विद्यार्थी को शिक्षित करके सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाने में उसकी सहायता करता है। भावी शिक्षक अपने इस कार्य को कुशलतापूर्वक और प्रभावपूर्ण तरीके से कर सके इसके लिए उन्हें 'शिक्षक शिक्षा' के द्वारा प्रशिक्षण देकर शिक्षण कार्य के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षक को किसी भी समाज का मानव निर्माता और शिल्पकार कहा जाता है जो अपनी योग्यता और कुशलता से बच्चों को अमूल्य निधि के रूप में रूपान्तरित कर समाज को सौंपता है। देश के भावी शिक्षक अपनी इस भूमिका का अच्छे से निर्वाह कर सके, इसके लिए आवश्यक है कि उनको गुणवत्ता युक्त शिक्षक शिक्षा प्रदान की जाए क्योंकि अध्यापन कार्य एक महत्वपूर्ण, गरिमामयी और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है।

f'k{kd f'k{kk dh vko';drk%

सभी शिक्षक जन्मजात नहीं होते इसलिए शिक्षित एवं प्रशिक्षित अध्यापक ही कक्षा शिक्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने में समर्थ होते हैं । बालकों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करने एवं सामाजिक, राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को सम्पूर्ण तन्मयता के साथ वहन करने योग्य बनाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापक होना अत्यन्त आवश्यक है। कोठारी आयोग ने कहा था, ''भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है'' अर्थात् किसी भी राष्ट्र की प्रगति उन बच्चों पर निर्भर है जो अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इन शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों में से कोई भी डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, समाज–सुधारक, राजनेता, कलाकार आदि बनकर राष्ट्र की प्रगति में'' सहायक बन सके इसके लिए आवश्यक है कि इन बच्चों को शिक्षित करने का कार्य ऐसे योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा किया जाए जो इन्हें देश की उन्नति करने योग्य बना सके। इसलिए देश के भविष्य निर्माण को ध्यान में रखते हुए गुणवत्तायुक्त शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता है ।

शिक्षक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन होता है जिसमें विभिन्न स्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है कि वह आगे आने वाली पीढ़ी को ज्ञान एवं मूल्यों के हस्तान्तरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक एवं विकासरात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में वे सक्षम हो सकें तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता तथा नवाचारिकता के साथ सांस्कृतिक उद्दीपना एवं मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास करना सम्भव हो सके ।

आज शिक्षक शिक्षा के द्वारा समाज को ऐसे योग्य प्रशिक्षित शिक्षक नहीं मिल पा रहे हैं जो एक शिक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों का सही से निर्वाह कर रहे हों। आज कितने ऐसे शिक्षक हैं जो शिक्षण के प्रति मन से समर्पित हैं या उसे सिर्फ एक नौकरी समझकर अपनी जीविका का साधन समझते हैं। क्या शिक्षण व्यवसाय में उनकी रूचि है या कोई अन्य नौकरी न मिलने के विकल्प रूप में वे बेमन से इसे अपना रहे हैं? शिक्षक शिक्षा की गुणात्मकता के लिए भावी शिक्षकों को इसे प्राप्त करने के उद्देश्यों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। आज पैसे के बल पर अनेक स्ववित्त पोषित संस्थान शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम को संचालित करने की मान्यता प्राप्त कर लेते हैं जहाँ न तो सही भवन हैं, न ही योग्य प्रशिक्षित शिक्षक, न ही व्यवस्थित प्रयोगशाला व पुस्तकालय, न ही नियमित कक्षाऐं। इससे शिक्षक शिक्षा की गुणात्मकता प्रभावित होती है। पैसे के बल पर जो भावी शिक्षक इस शिक्षा को प्राप्त करते हैं, उनमें शिक्षण के प्रति लगन, समर्पण, योग्यता, शिक्षक के गुणों का अभाव होता है। किसी भी शिक्षा प्रणाली में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है इस लिए भावी शिक्षकों के उचित शिक्षा तथा प्रशिक्षा के बिना वे बच्चों के उचित निर्माता नहीं बन सकते और नही शिक्षण व्यवसाय में पर्याप्त सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आज शिक्षकों की भूमिका कई पहलुओं से पहले से अलग हैं। बदलते सामाजिक, आर्थिक समीकरण, व्यापक होती सोच के बीच शिक्षकों की भूमिका भी व्यापक हुई है। अब केवल कोर्स के अनुरूप पढ़ाना भर ही उसकी जिम्मेदारी नहीं रह गई है बल्कि पढ़ाई के साथ–साथ उनकी समस्याओं का समाधान, व्यावहारिक ज्ञान देने में समर्थ होते हैं तो वे देश के भविष्य को एक खूबसूरत आकार देने में सफल माने जाते हैं ।

f'k{kd&f'k{kk e x.kkRedrk gr l>ko&

शिक्षक–शिक्षा में गुणात्मकता होने पर ही वह राष्ट्र के विकास में सहायक हो सकती है। अध्यापक शिक्षा की गुणात्मकता के लिए उसमें सुधार लाने की आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए निम्न उपायों पर ध्यान देना आवश्यक है–

- शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों को मान्यता देते समय संस्थानों की भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की सर्तकतापूर्वक जॉच करनी चाहिए ।
- स्ववित्तपोषित प्रषिक्षण संस्थाओं में योग्य एवं निर्धारित मापदण्डों को पूरा करने वाले शिक्षकों की नियुक्ति पर बल दिया जाए ।
- शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम को उपयोगी बनाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।
- परम्परागत शिक्षण–पद्धति के स्थान पर नवीन और उन्नत तकनीकों का प्रयोग किया जाए ।
- सेवारत शिक्षक अपने शिक्षण को और उपयोगी बनाने के लिए ओरिऐंटेशन तथा रिफ्रेशर कोर्स को गम्भीरता से करें ।
- इन कोर्सों के द्वारा शिक्षक को जो नवीन तकनीकों अर्थात् नवाचारों का ज्ञान हो उसे अपने शिक्षण में लागू करें ।
- प्रशिक्षण संस्थानों में अभ्यास विद्यालय, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, उपकरणों की समुचित व्यवस्था हो ।
- मूल्यांकन की वस्तुनिष्ठ प्रणाली हो और सन्तोशजनक मूल्यांकन किया जाए।

मनुष्य के सम्यक् विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है। खुद सरकार भी शिक्षा को देश के विकास की प्रमुख शर्त मानती है। यही कारण है कि देश में हर स्तर पर शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए हर मुमकिन कदम उठाए जा रहे हैं। लेकिन ये कोशिशें उस शिक्षक के बिना पूरी नहीं हो सकती, जो इस पूरी प्रक्रिया की रीढ़ है। इसलिए शिक्षक शिक्षा के द्वारा भावी शिक्षकों को ऐसा सैद्धान्तिक और व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाए कि वे समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए आज के बच्चों को शिक्षित बना सकें, उनका चरित्र–निर्माण कर सकें और उन्हें अच्छे–बुरे की पहचान करा सके, जिससे वे सद्मार्ग पर चलने योग्य बन सकें। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि भावी शिक्षक शिक्षा को सिर्फ प्रशिक्षण मानकर परीक्षा में पास होना न समझे बल्कि शिक्षण व्यवसाय को सम्पूर्ण निष्ठा और दिल से स्वीकार करते हुए गम्भीरता से इसका अध्ययन करें। वे देश के भविष्य अर्थात् बालक के निर्माता हैं और अपने इस कार्य को समर्पण भाव से करें। अतः शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को समाज की वर्तमान आवश्यकतानुसार तथा भावी अपेक्षाओं के अनुरूप बनाना आवष्यक है।

lUnHk%&

1. डा0 मया शंकर सिंह – अध्यापक शिक्षा गुणात्मक विकास
2. पी0डी0 पाठक– भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
3. डा0 जी0सी0 भट्टाचार्य, अध्यापक शिक्षा